मूल्य : एक प्रति ` 0.50
वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

उत्तर - साक्षरताकर्मियों के लिए

दिसंबर 2011 वर्ष 16, अंक 12

जन्मदिवस 3 दिसंबर पर विशेष

देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद

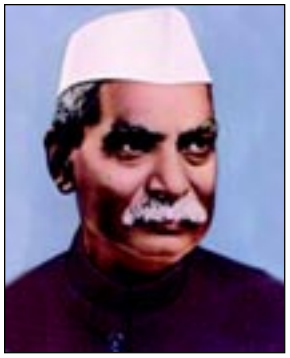

देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर, 1884 को बिहार के जीरादेई नामक स्थान पर हुआ था। बचपन से ही वे पढ़ाई में बेहद तेज थे। शिक्षा समाप्ति के बाद उन्होंने वकालत की भी पढ़ाई की और इसमें सर्वोच्च रहे। बिहार की राजधानी पटना स्थित सदाकत आश्रम उनकी कर्मभूमि थी। स्वाधीनता की लड़ाई में नेहरू, पटेल, टंडन आदि नेताओं के साथ उन्होंने भाग लिया था और अनंत मुसीबतें झेली थीं। अंतरिम सरकार में उन्हें संविधान सभा का अध्यक्ष बनाया गया और अंततः भारतीय गणराज्य का पहला राष्ट्रपति।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद बेहद सीधे, सरल और सादगीपसंद थे। देश का राष्ट्रपति बनने के बाद भी उनकी यह सादगी बरकरार रही। वे महलनुमा राष्ट्रपति भवन के आलीशान दीवानखानों में एक आश्रमवासी साधु की भांति ही रहते थे। राष्ट्रपति भवन में अपने काल में उन्होंने एक कमरे को भीतर से चटाइयों

कल्पना के पंखों पर भरें ऊंची उड़ान

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा देश भर में आयोजित किए जाने वाले राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह का ट्रस्ट-परिसर, नेहरू भवन, नई दिल्ली में 14 नवंबर, 2011 को उद्घाटन किया गया। प्रख्यात शिक्षाविद् एवं वर्तमान में योजना आयोग में सदस्य, डॉ. नरेंद्र जाधव ने एक सप्ताह तक चलने वाले इस राष्ट्रीय बाल पुस्तक एवं गतिविधि मेला का उद्घाटन किया। मेले का थीम (मुख्य विषय) था : *कल्पना के पंखों पर भरें ऊंची उड़ान।* इस अवसर पर बच्चों के लिए अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए, जिनमें कथावाचन, गीत प्रस्तुति, नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रम सहित फिल्म का प्रदर्शन भी शामिल थे। मेले में विशेष तौर पर बच्चों के लिए पुस्तकें प्रकाशित करने वाले प्रकाशकों ने अपने स्टॉल लगाए थे। ऐसी बहुत-सी गतिविधियों का 18 से 20 नवंबर, 2011 तक पूर्वा सांस्कृतिक केंद्र, लक्ष्मीनगर, नई दिल्ली में भी आयोजन किया गया।

विदित हो कि राष्ट्रीय बाल पुस्तक एवं गतिविधि मेला राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह का एक भाग है जो देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिवस के स्मरण स्वरूप सारे देश में मनाया जाता है।

जन्मदिवस 10 दिसंबर पर विशेष

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी स्वतंत्र भारत के पहले गवर्नर जनरल थे। सन् 1948 में जब लॉर्ड माउंटबेटन ने गवर्नर जनरल का पद छोड़ा तो यह जिम्मेवारी राजाजी को दी गई। वह भारत के नए संविधान के लागू होने तक गवर्नर जनरल रहे। गवर्नर जनरल के पद से हटने के बाद वे बिना विभाग के मंत्री बनाए गए, किंतु सन् 1950 में जब गृह मंत्री वल्लभभाई पटेल की मृत्यु हुई तो उन्हें गृह विभाग की जिम्मेवारी सौंपी गई। देश के पहले चुनाव के कुछ पहले तक वे गृह मंत्री रहे। कुछ समय के लिए मद्रास प्रांत के मुख्यमंत्री भी रहे।

राजाजी का जन्म मद्रास के सेलम जिले में होसूर के निकट एक गांव में 10 दिसंबर, 1878 को हुआ था। पढ़ाई पूरी कर वे वकालत करने लगे। सन् 1919 में राजनीति में भाग लेना शुरू किया और सत्याग्रह आंदोलन में शामिल हुए। स्वाधीनता आंदोलन के दौर में उन्हें पांच बार जेल जाना पड़ा।

तथा आश्रम की भांति घासफूसों से संवार रखा था। अपने हर जन्मदिवस पर इसी प्रकार की झोंपड़ियों में रहने वालों की याद बराबर बनाए रखने के लिए वह कुछ घंटे चिंतन-मनन और ध्यान धारण करते थे। राष्ट्रपति भवन में दस साल रहकर भी बाबू राजेंद्र प्रसाद साधु पुरुष ही रहे। राष्ट्रपति भवन से विदा होते समय तत्कालीन गृह मंत्री तथा बाद में प्रधानमंत्री बने लालबहादुर शास्त्री के मुंह से बरबस ही यह कथन निकल पड़ा कि ''यह विशाल राष्ट्रपति भवन हमेशा के लिए याद करता रहेगा कि कभी इसमें भी एक साधु आकर रहा था।''

मई 1962 की चिलचिलाती धूप में राष्ट्रपति भवन को सदा के लिए छोड़कर अपने गृह राज्य स्थित सदाकत आश्रम में आगामी जीवन बिताने के लिए वे घोड़ागाड़ी पर दिल्ली की सड़कों पर आम लोगों के बीच काफी देर तक रहे। सफेद वस्त्र पहने दोनों हाथ जोड़कर वे लोगों को नमस्कार कर रहे थे। सड़क के दोनों ओर भारी भीड़ अपने राष्ट्रपति को विदा करने के लिए खड़ी थी। अंततः यह घोड़ागाड़ी नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर जाकर रुकी, जहां से उन्हें ट्रेन द्वारा पटना जाना था। कृतज्ञ राष्ट्र ने सन् 1962 में उन्हें 'भारत रत्न' के अलंकरण से सम्मानित किया था। 28 फरवरी, 1963 को उनका निधन हो गया।

राजाजी कुशल राजनीतिज्ञ और प्रशासक होने के अलावा अंग्रेजी और तमिल के जानेमाने लेखक भी थे। रामायण और महाभारत के उनके अंग्रेजी अनुवाद बहुत प्रसिद्ध हैं और उनका अन्य कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। राजाजी ने गांधी जी के जेल जाने पर उनके पत्र 'यंग इंडिया' का संपादन किया था। उनकी भाषा ऐसी थी कि वे कठिन विषयों पर भी आसान शब्दों में अपने भाव व्यक्त कर देते थे। उनकी विचारशैली तर्कनिष्ठ होती थी। सन् 1937 में मद्रास के मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए बड़ा काम किया। लगभग 25 वर्षों यानी स्वाधीनता के बाद उन्होंने हिंदी के संबंध में अपनी राय बदली और कहा कि अंग्रेजी को तब तक रखना चाहिए जब तक दक्षिण भारत के लोग स्वतः उसके स्थान पर हिंदी को राजभाषा के रूप में न स्वीकार कर लें।

राजाजी भारत की प्राचीन संस्कृति के कट्टर समर्थक थे। बावजूद इसके, वर्ण व्यवस्था की बुराइयों को समाप्त करने के भी वे हिमायती थे। नशाखोरी के वे सख्त खिलाफ थे। भारत सरकार ने 1954 में उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया था।

लघुकथा

सर्वोत्तम शिक्षा

सत्यानंद के आश्रम में आनंद, सोम, विवेक और रोहित नामक शिष्य रहते और शिक्षा ग्रहण करते थे। सत्यानंद समभाव से बड़े प्यार से शिक्षा देते थे। एक दिन शाम को गुरुजी के भोजन करने के बाद चारों शिष्य भोजन करने बैठे। ऐसे समय उनके पास भूख से व्याकुल एक छोटा बालक पहुंचा। वह उनसे रोटी की याचना करने लगा। परंतु उन्हें उस पर दया नहीं आई। वे सब भोजन में तल्लीन रहे। बालक ने बार-बार याचना की, परंतु उनका दिल नहीं पसीजा। बेचारा भूखा बालक निराश होकर लौटने लगा। तब सत्यानंद ने उठकर स्वयं उसे भोजन दिया। बालक वहां से चला गया। चारों शिष्यों ने जब भोजन कर लिया तब उन्होंने उन्हें अपने पास बुलाया और पूछा, ''बेटो, बताओ, आज के व्याख्यान में मैंने किस बात की शिक्षा दी।''

आनंद ने जवाब दिया, ''आपने सर्वोत्तम दान की शिक्षा दी गुरुजी।''

सत्यानंद ने पूछा, ''बताओ, इसमें तुम लोगों ने क्या जाना?''

रोहित ने जवाब दिया, ''गुरुजी, हमने जाना कि भूखे, रोगी, वृद्ध, असहाय, शरीर से लाचार और विपत्ति में पड़े लोगों को मदद देना ही सर्वोत्तम दान है।''

अब सत्यानंद ने पूछा, ''बेटो, कुछ समय पहले तुम्हारे पास भोजन था। भूख से व्याकुल एक बालक तुम्हारे पास आया था। भोजन चाह रहा था। परंतु तुममें से किसी को उस पर दया नहीं आई। उसे भोजन नहीं दिया। सिर्फ अपनी भूख मिटाते रहे। बताओ, तुम लोगों ने उसकी मदद क्यों नहीं की?''

इस पर चारों शिष्य निरुत्तर हो गए। उनके चेहरे पर भूल के भाव उभर आए। तब सत्यानंद ने उन्हें समझाया, ''बेटो, शिक्षा जरूरी बातों को जान लेना मात्र नहीं है। सीखी बातें जीवन में उतारना चाहिए। उन्हें अपने कार्य और व्यवहार में लाना चाहिए। तुम शिक्षा ग्रहण कर रहे हो तो इन बातों पर विशेष ध्यान दो। सद्गुणों और सद्व्यवहार से ही व्यक्ति चरित्रवान बनता है और वह संसार में यश और कीर्ति प्राप्त करता है।''

चारों शिष्यों ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया और संकल्प लिया कि वे भविष्य में इन बातों का ध्यान रखेंगे। शिक्षा को अपने कार्य और व्यवहार में लाएंगे।

कमलचंद वर्मा, डॉ. आंबेडकरनगर, महू, म.प्र.

प्रेरणा

शिक्षा की नई इबारत लिखतीं ये किशोरियां

उत्तर प्रदेश के शहर वाराणसी तथा उसके आसपास कुछ तरुणवय मुस्लिम युवतियों के कारनामे चर्चा में हैं। बीस साल से नीचे की कुछ तरुणियां अपने घर और परिवेश के अनपढ़ बच्चों और वयस्कों को साक्षर करने के काम में जुटी हुई हैं। जूही सिद्दीकी अपनी सहेली तनवीर बानो के साथ मिलकर अपने गांव मिर्जामुराद में एक कमरे में बच्चों को पढ़ाती हैं। बच्चे यहां उर्दू, हिंदी तथा अंग्रेजी के शब्दों से वाकिफ हो रहे हैं। तनवीर के शब्दों में, ''पढ़ने-पढ़ाने के लिए कोई भी जगह छोटी नहीं होती।''

उज्मा सबरीन और सबीना बानो बनारस से 30 किमी दूर बेनीपुर में बुनकरों की लगभग डेढ़ सौ लड़कियों समेत दो सौ से अधिक बच्चों को भाषाओं के साथ गणित और कला विषय की भी पढ़ाई करवा रही हैं। ''हमें इन बच्चों को पढ़ाने में मजा आता है!'' वे कहती हैं। गांववालों ने इसके लिए जगह उपलब्ध करवाई। गांववाले मुफ्त में यह स्कूल चलाने के लिए चंदा भी देते हैं।

इंटर पास करने के बाद तबस्सुम और तरन्नुम ने सजोइन गांव के बुनकरों को बरसों से बंद पड़े मदरसा अंसारुल उलूम को दोबारा शुरू करने के लिए राजी कर लिया। अंततः 17 वर्षों से बंद पड़ा यह मदरसा खुल गया, जहां इन दोनों सहेलियों का साथ निभाती हैं रबीना। यहां विद्यार्थियों में 175 बच्चे हैं तो 25 वयस्क भी हैं। पढ़ाने के काम में एक मौलवी भी शामिल हैं। पारंपरिक मदरसों के विपरीत यहां बच्चे 'गुड मॉर्निंग' और 'सर' बोलते हैं। सिर पर दुपट्टा डाले औरतें और लड़कियां उर्दू, हिंदी और अंग्रेजी के साथ-साथ गणित भी सीखने-पढ़ने आ जाती हैं। फिर वे सिलाई, कढ़ाई, बुनाई और डिजाइनिंग भी सीखती हैं। इस पढ़ाई से जहां ये नवसाक्षर नए-नए सपने देखने लगी हैं वहीं ये पढ़ानेवालियां भी इन्हें पढ़ाने और जिंदगी की नई शुरुआत करने में मदद देकर काफी खुश हैं।

लोहटा के एक हिस्से रहीमपुर में एक आधुनिक मदरसा ख्वाजा गरीब नवाज खोलने वाली जमीला खातून के इस मदरसे में 130 लड़कियां पढ़ती हैं और दो लड़कियां सलमा और समीना बानो बच्चियों को पढ़ाने में सहयोग देती हैं।

बनारस और आसपास के विशेष रूप से बुनकर परिवारों के बच्चे इन शिक्षा केंद्रों और नए मदरसों में जाकर शिक्षा की नई रोशनी में दिपदिप कर रहे हैं। बी.एच.यू. के वैज्ञानिक डॉ. रजनीकांत सारनाथ स्थित अपने स्वयंसेवी संगठन ह्यूमन वेलफेयर एसोसिएशन के माध्यम से गांवों में खुले इन नए 'स्कूलों' को मदद दे रहे हैं। वे इन स्कूलों में मुफ्त किताबें और कॉपियां मुहैया करवाते हैं। संगठन इन स्वयंसेवी लड़कियों को महीने में एक मानदेय राशि भी मुहैया करा रहा है। इससे इन लड़कियों में सशक्तीकरण का भाव भी पैदा हो रहा है। खास बात यह है कि रूढ़िवादी मुल्ला और मौलवी भी इस साक्षरता अभियान का समर्थन करने लगे हैं। एक मुफ्ती का कहना है—आज की दुनिया में लड़कियों का शिक्षित होना जरूरी है। उनकी तरबियत (इस्लामिक तहजीब) के साथ-साथ तालीम भी होनी चाहिए। लड़कियों को आधुनिक भाषाओं और साइंस के साथ दीनीयात सीखनी चाहिए।

ज्ञात हो कि बनारस के इर्दगिर्द मुसलमानों की आबादी वाले कई गांवों में स्कूल नहीं हैं, लेकिन गांववालों के सहयोग और उत्साही तरुणियों की कोशिशों से आसपास के 32 गांवों में 13 आधुनिक मदरसे खुल गए हैं। कॉलेज में जाने वाली इन लड़कियों की पहल से गांवों में गरीब मुस्लिम परिवारों की तस्वीर जल्दी ही बदल सकती है।

इंडिया टुडे के 20 अप्रैल, 2011 के अंक में छपी रपट 'किशोर क्रांति' (ले.: फरजंद अहमद, साथ में राहुल यादव) का संपादित एवं संक्षिप्त प्रस्तुतीकरण।

लघुकथा

विनम्रता

सारी रात चले आंधी-तूफान ने सब कुछ उलट-पलट कर रख दिया था।

जब तूफान शांत हुआ, सूरज की पहली किरण में जमीन पर औंधे पड़े बरगद ने मुस्कुराती हुई दूब से चिढ़कर व्यंग्य में कहा, ''अरे, तुम वहीं की वहीं! क्या टोना कर दिया था तुमने तूफान पर?''

''भइया, यह टोना नहीं, विनम्रता है। तुम तूफान के सामने अकड़े रहे और मैंने सिर झुका लिया।'' दूब ने विनम्रता से कहा।

सीख : विनम्रता से सब कुछ जीता जा सकता है।

—आनंद बिल्थरे, बालाघाट, मध्य प्रदेश

छह कविताएं, छह रंग

चलने वाले खूब हुए

पारस नाथ बुलचंदानी

थोड़ा-सा तुम पढ़-लिख लेते
मेले-ठेले खूब हुए
पुस्तक से बातें कर लेते
गड़बड़झाले खूब हुए।

मुनिया के कंधे पर बस्ता
कितना अच्छा लगता है
पढ़े-लिखे भइया से आकर
मुखिया भी तो मिलता है
पढ़-लिखकर ही दिल में सबके
फूल खुशी का खिलता है
तुम क्यों पीछे रहते हो अब
पढ़ने वाले खूब हुए।

मेहनत से किस्मत बदलेगी
रोना-धोना बंद करो
साथ तुम्हारे सच्चाई है
झूठों से तुम नहीं डरो
रास्ता तुमको मिल जाएगा
हिम्मत से तुम पांव धरो।

धीरे-धीरे तुम देखोगे
चलने वाले खूब हुए।

फरीदाबाद, हरियाणा

शिक्षा

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

पढ़ना-लिखना
सबको भाय
जीवन बगिया
यह महकाय।

अक्षर ज्ञान
बड़ा अनमोल
जगह-जगह तुम
पीटो ढोल।

निरक्षर का न
ठौर-ठिकाना
सहता वह तो
कष्ट है नाना।

शिक्षा तो है
अद्भुत होती
लौ इसकी है
तम भगाती।

कांगड़ा, हि.प्र.

शाला जाओ

अशोक 'आनन'

शाला जाओ
पढ़कर आओ।
आकर खेलो
खाना खाओ।
याद करो फिर
सो तुम जाओ।
पढ़कर जीवन
सफल बनाओ।

मक्सी, शाजापुर, म.प्र.

कलम

डॉ. रामशंकर चंचल

नन्ही-नन्ही
प्यारी-प्यारी
सबके मन की
राजदुलारी
सस्ती-सी
सुंदर यह लगती
रंग-बिरंगी
गौरवशाली
ज्ञान लुटाती
शिक्षित करती
जीवन को यह
राह दिखाती
हर व्यक्ति के
काम यह आती
हर देश में
वास यह करती
ऐसी साहसी
ताकत वाली
बिन उसके
राह न सूझती
सबके मन पर
राज यह करती
सब देशों पर
धाक जमाती।

झाबुआ, म.प्र.

पढ़ो-लिखो

रमाकांत श्रीवास्तव

पढ़ो-लिखो इंसान बनो
भारत मां की शान बनो
अपढ़ मूक पशु जैसे हैं
पढ़कर तुम विद्वान बनो
देश जहां जन्मे हो तुम
उसके तुम अभिमान बनो
पढ़े सदा आदर पाते
तुम भी पूज्य महान बनो
कलम तुम्हारी रुके नहीं
वह वंशी तुम गान बनो।

लखनऊ, उ.प्र.

पढ़ लो, लिख लो

प्रो. शरद नारायण खरे

पढ़ लो, लिख लो
आगे बढ़ लो
पढ़-लिखकर के
हक को लड़ लो
समझदार बनकर के
मान को अड़ लो
उज्ज्वल जीवन
सुख को गढ़ लो
मान मिलेगा प्रियवर
पढ़ लो, पढ़ लो।

मंडला, म.प्र.

पुस्तक और पुस्तक मेला

पुस्तक होती है अनमोल

डॉ. अनामिका गुरु रिछारिया

पुस्तक होती है अनमोल
बिन बोले ही देती बोल

पुस्तक देती है हमको ज्ञान
जब होता है मन परेशान
सूझे न जब कोई निदान
पुस्तक से मिलता समाधान
मन में बज उठते हैं ढोल
पुस्तक होती है अनमोल

पुस्तक में होती नई खोज
पुस्तक से मिलती नई सोच
पुस्तक में रहता इतिहास
मनोरंजन हास-परिहास
हर रहस्य को देती खोल
पुस्तक होती है अनमोल

जब न हो कोई संगी-साथी
चिट्ठी भी जब न मिल पाती
और उदासी मन पे छाती
पुस्तक ही तब मन बहलाती
मित्रों का करती है रोल
पुस्तक होती है अनमोल।

कानपुर रोड, झांसी, उ.प्र.

पुस्तक

कृष्णकुमार 'अजनबी'

बच्चे हो या बूढ़े जवान
पुस्तक पढ़ना सबकी शान
साहब अफसर नेता हो
मजदूर हो या हो किसान
पुस्तक हमें राह दिखाती
देती हमेशा जीवन दान
इससे कभी मुख न मोड़ें
इसे ही समझें अपना ज्ञान
पोथी पढ़-पढ़ पंडित होते
पुस्तकों से ही बढ़ता ज्ञान
धन भले सुख वैभव देता
ज्ञान दिलाता सदा सम्मान
पुस्तक पिटारा है ज्ञान का
इसे अपना सच्चा दोस्त मान
रख भरोसा 'अजनबी'
यही करेगा सबका कल्याण।

रायपुर, छत्तीसगढ़

पुस्तक सच्ची मित्र है

संदीप 'सृजन'

पुस्तक से कर मित्रता
करिए सर्व सुधार
पुस्तक सच्ची मित्र है
जो करती उद्धार।
पुस्तक को पूजो सदा
और करो सम्मान
शिक्षा के कारण मिलता
इस जग में सम्मान
हर पुस्तक में ज्ञान है
और भरा विज्ञान
पुस्तक में अक्षर बसे
अक्षर में भगवान
पुस्तक जिसने भी पढ़ी
और बढ़ाया ज्ञान
उसने दुनिया में भरी
मित्रो, नई उड़ान
पुस्तक पढ़ आगे बढ़े
और बने श्रीमंत
धन-वैभव-सम्मान पा
बने लक्ष्मी कंत।

उज्जैन, म.प्र.

पुस्तक मेला

कृष्णा अवस्थी, *कांगड़ा, हि.प्र.*

लगा शहर में पुस्तक मेला
मैं भर लाई पूरा थैला
ज्यों-ज्यों पढ़ना किया शुरू
लगने लगी वह अपनी गुरु
हर विषय का बोध कराया
चुटकुलों ने कितना हंसाया
महापुरुषों की पढ़ो कहानी
पढ़ो वीरांगनाओं की कुर्बानी
बच्चों के साहस की गाथा
पहेलियों से चकराया माथा
चित्र देखकर हुई हैरान
कितनी शान, कितना ज्ञान!
जब-जब मैंने हिम्मत हारी
पुस्तकों ने नैया पार उतारी
पुस्तकों को बना लो साथी
मंगाओ किताबें लिखो पाती।

चांद-तारे हैं आसमान की कविता
पुस्तक हैं धरती की कविता
नई-नई राहें दिखलाती हैं
जीवन अनुभव सिखलाती हैं।

डॉ. अंजना अनिल, अलवर, राजस्थान

जीवन में बढ़ना है तो जरूरी है किताब
जीवन को गढ़ना है तो जरूरी है किताब
जीवन को मढ़ना है तो जरूरी है किताब
जीवन में लड़ना है तो जरूरी है किताब।

डॉ. महेंद्र कुमार ठाकुर, रायपुर, छत्तीसगढ़

कुछ सवालों में, कुछ जवाबों में
प्यार के बीते हुए ख्वाबों में
मेरी समाधि पर नहीं आना
मैं मिलूंगा तुम्हें किताबों में।

पं. गिरिमोहन गुरु, होशंगाबाद, म.प्र.

अनोखा स्कूल, जहां बच्चे बोलते हैं 44 भाषाएं

ब्रिटेन में एक ऐसा प्राथमिक स्कूल है जहां बच्चे 44 विदेशी भाषाएं बोलते हैं। इस स्कूल का नाम है सेंट मैथ्यूज चर्च ऑफ इंग्लैंड प्राइमरी स्कूल। भारत की दो क्षेत्रीय भाषाएं कन्नड़ और तेलुगु भी यहां बोली जाने वाली भाषाओं में शामिल हैं। इसके अलावा बच्चे अफ्रीकी, फिलीपीनी, योरूबा और जुलु जैसी भाषाएं भी बोलते हैं। कुल मिलाकर यहां सात महाद्वीपों की भाषाएं बोली जाती हैं। यहां के शिक्षकों और बच्चों को भाषा की यह विविधता बहुत भाती है।

उत्पादन बढ़ाओ, खर्च घटाओ और अपव्यय बिलकुल न करो।

—वल्लभभाई पटेल, 75वें जन्मदिवस पर राष्ट्र को संदेश

पाठकीय प्रतिक्रिया

- **साक्षरता संवाद : नवंबर 2011 :** इस विशाल देश में साक्षरता से निरंतर संवाद पाठकों का सौभाग्य है। ये लघु आलेख और आवश्यक सूचनाएं सभी के लिए उपयोगी हैं। नवं. अंक में 'पुस्तकप्रेमी नेहरू' पुस्तकों के सम्मान पर एक सुंदर उदाहरण है। सामग्री चयन के लिए संपादक जी को धन्यवाद।
  रमाशंकर श्रीवास्तव, उत्तमनगर, नई दिल्ली
- छोटी-छोटी रचनाएं रोचक और ज्ञानवर्द्धक लगीं।
  देवराज आर्यमित्र, हरीनगर, नई दिल्ली
- सकल सामग्री स्तुत्य है। नेहरू जी पर संस्मरणात्मक लघु आलेख अच्छा लगा। अंक का शुभारंभ से समापन तक सब कुछ सत्य, शिव और सुंदर है। बधाई। **ओम प्रकाश मंजुल,** बरेली, उ.प्र.
- पुस्तकों में सन्निहित ज्ञान की अलख जगाता **सा. सं.** छोटे-बड़े, शहरी-ग्रामीण, हर वर्ग के लिए उपयोगी एवं प्रेरणादायी सामग्री अपने छोटे-से कलेवर में समाये होता है। नवसाक्षरों के लिए प्रकाशित छोटी-छोटी कविताएं सहज, सरल, प्रेरक एवं ज्ञानवर्द्धक होती हैं। अंक संग्रहणीय होते हैं।
  कौशल्या अग्रवाल, देहरादून, उत्तराखंड
- **सा. सं. : अक्तू. 2011 :** 'वह भीख मांगकर बनवाते हैं स्कूल' शीर्षक खबर दिल को छू गई। कहा भी जाता है—विद्यादान सर्वोत्तम दान। देसाई जी का जज्बा प्रशंसनीय व प्रेरणादायी है। समाज को ऐसे ही तरह के लोगों की जरूरत है।
  दुर्गाप्रसाद शर्मा, बुलंदशहर, उ.प्र.
- अतीत की महत्ता बताती संबंधित माह की घटनाओं की प्रस्तुति सराहनीय प्रयास है। **सा. सं.** में छोटी-छोटी रचनाओं में भी बड़ा संदेश होता है। हर अंक सहेजने लायक होता है।
  शम्भु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल', गोपेश्वर, चमोली, उत्तराखंड
- पत्र में आपने गागर में सागर की तरह सारा कुछ प्रकाशित किया है। कविताएं छोटी किंतु सार्थक होती हैं। आप लगातार उपयोगी सामग्री प्रकाशित कर रहे हैं।
  कैलाश चंद्र भाटिया, अलीगढ़, उ.प्र.
- महात्मा गांधी तथा लालबहादुर शास्त्री जी के बारे में बहुत उपयोगी सामग्री छापी आपने। कविताएं उच्च कोटि की थीं। पत्र उत्तर-साक्षरताकर्मियों के लिए ही नहीं सभी आयुवर्ग और सभी स्तर के पाठकों के लिए भी ज्ञानवर्द्धक है।
  डॉ. जय नारायण कौशिक, सरस्वती विहार, दिल्ली
- अंक ढेर सारी प्रेरणाप्रद सामग्री लेकर आया।
  पं. गिरिमोहन गुरु, होशंगाबाद, म.प्र.
- नियमित हमको मिल रहा साक्षरता संवाद
  देता हर इक अंक है एक नया ही स्वाद।
  हर नवसाक्षर के लिए यह तो है अनिवार्य
  नियमित छापा आपने किया महान है कार्य।
  रोचक ढंग से ज्ञान का यह करता विस्तार
  हर रचना के मूल से निकले यह ही सार।
  इसमें है आनंद जो कहीं न उसकी काट
  हर जन इसे सराहता तकता इसकी बाट।
  डॉ. महेंद्र कुमार ठाकुर, रायपुर, छत्तीसगढ़

किताबें सच्ची साथी हैं
अकेलापन दूर करती हैं
ज्ञान-समझ को बढ़ाती हैं
सब जगह साथ निभाती हैं।
नरेंद्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र.

साक्षरता का नया सवेरा

रूपनारायण काबरा

जहां निरक्षरता के तम ने
डाल रखा है अपना डेरा
हमें वहां लाना है मिलकर
साक्षरता का नया सवेरा
जिसने पढ़ना-लिखना सीखा
पाया उसने नया सहारा
उसे ज्ञान के धन-दौलत का
मानो मिला खजाना न्यारा
अनपढ़ को यदि आप पढ़ाओ
पुण्य मिले, यश गान अपारा
बच्चे बूढ़े सब पढ़ जाएं
जागे हिंदुस्तान हमारा
एक-एक कर लगें पढ़ाने
तो फिर मंजिल दूर नहीं
अंधियारा तो भग जाएगा
खुशहाली फिर दूर नहीं
सभी समस्या मिट जाएगी
सब शिक्षित हों तभी सवेरा
साक्षरता का दीप जले तो
नहीं टिकेगा कहीं अंधेरा
आज समस्याओं ने घेरा
ये सब तो हल हो जाएंगी
साक्षरता का दीप जले तो
नहीं टिकेगा कहीं अंधेरा।

वैशालीनगर, जयपुर, राजस्थान

साक्षरता मंत्र

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

पुस्तक ला दो
तख्ती ला दो
साक्षरता मंत्र
मुझे सिखा दो।

निरक्षर रह
दूभर जीना
अपमान घूंट
मुझे न पीना।

पढ़-लिखकर मैं
बनूं विद्वान
बढ़ जाए तब
देश की शान।

अंगूठा छाप
मैं न रहूंगा
अपमान तनिक
मैं न सहूंगा।

अक्षर ज्योति
लौ जगाती
शिक्षा से बढ़
कोई न थाती।

चिट्ठी-पत्तर
मैं पढ़ जाऊं
जीवन अपना
सफल बनाऊं।

कांगड़ा, हि.प्र.

है अक्षर ही मान मनुज का

भगवती प्रसाद गौतम

आन हमारी, शान हमारी
जन-मन की पहचान
है अक्षर ही मान मनुज का
अक्षर देव महान।

अक्षर-अक्षर कदम बढ़े तो
नव अध्याय रचेंगे
होगा हर दरवाजा रोशन
घर-गलियार सजेंगे
आओ, अक्षर-ज्योति जगाकर
हर लें सब अज्ञान
है अक्षर ही मान मनुज का...

नजर खुली रख आजू-बाजू
ताकत खुद की जानें
कलम उठाकर शीश उठाएं
दुनिया को पहचानें
मुट्ठी में भर भाग्य छेड़ दें
मेहनत के सहगान
है अक्षर ही मान मनुज का...

नई जिंदगी, नई रीत हो
सीखें नए सलीके
घिसी-पिटी हर लीक छोड़ अब
बदलें तौर-तरीके
खुशहाली से सराबोर हो
सारा हिंदुस्तान
है अक्षर ही मान मनुज का...

कोटा, राजस्थान

बनें चमक तारे

गोपीनाथ कालभोर

समता के बनेंगे किनारे
अक्षरों के होंगे जब सहारे
जब हम पढ़ेंगे-लिखेंगे
बहेंगी तब शिक्षा की पनारे।

जिंदगी में जरूरी है शिक्षा
इसके बिना हम बेसहारे
रहेंगे गरीब और अनपढ़
बुलंद नहीं होंगे सितारे।

अक्षर-ज्ञान और हों पहाड़े
अज्ञानता नहीं आए आड़े
जोड़-गुणा-भाग गर सीख लिया
धुलेंगे कलंक हमारे सारे।

आओ मिल बैठकर पढ़ें हम
साक्षरता कक्षा जाएं सारे
जिंदगी की नई शुरुआत करें
साक्षरता के बनें चमक तारे।

खंडवा, म.प्र.

R. N. I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/09-11
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2009-11
Mailing date 25/26

मिसाल

घरेलू नौकरानियों के लिए साक्षरता मुहिम

घरेलू नौकरानियों को पढ़ाने-लिखाने के प्रति हममें से किसी को शायद ही कभी खयाल आता हो। किंतु मुंबई के एक दंपती ने घरेलू नौकरानियों के लिए साक्षरता मुहिम चलाकर एक उत्तम मिसाल कायम की है। नेहा वर्मा और सलिल नामक यह दंपती मुंबई के एक उपनगरीय इलाके अंधेरी (ईस्ट) में एक हाउसिंग सोसायटी में रहते हैं। वर्मा दंपती ने अपने इस अभियान को 'साक्षर' नाम दिया है। उनके इस अभियान को अब साल भर पूरा हो रहा है। इस दंपती ने अपनी सोसायटी की गृहिणियों और कॉलेज जाने वाले छात्र/छात्राओं को स्वयंसेवक के तौर पर जोड़ा, जो हफ्ते में चार दिन इन्हें पढ़ाते हैं। धीरे-धीरे इस साक्षरता अभियान की चर्चा दूसरे लोगों तक भी पहुंची, जिससे और भी घरेलू नौकरानियां व अन्य स्वयंसेवक उनकी कक्षाओं से जुड़ने हेतु प्रेरित हुए। इन कक्षाओं में 'विद्यार्थियों' को नियमित तौर पर बुनियादी गणित तथा हिंदी भाषा के लेखन की शिक्षा दी जाती है।

लघुकथा

चिट्ठी

"दादी, मैं जया। कल आ रही हूं। आपके लिए क्या लाऊं?"

"जया, इस बार तू मुझे अक्षर ज्ञान करा जाना इन दो महीनों की छुट्टी में। मोबाइल पर तेरी लिखी चिट्ठी मुझे क्या समझ आएगी, मुझे तो पोस्टकार्ड भी पोस्टमैन से पढ़वाना होता है। तेरे दादाजी के रिटायरमेंट पर ऑफिस वालों द्वारा दी गई रामायण भी मैं नहीं पढ़ पाती। तू इस बार मुझे इतना अक्षर ज्ञान करा जाना ताकि पोस्टकार्ड-रामायण पढ़ सकूं। और हां, तू भी मुझे पोस्टकार्ड ही लिखा कर, मोबाइल पर तेरा लिखा मैं समझ ही नहीं पाती।"

"ठीक है दादी, दो महीने में आपको 'क' कबूतर से 'ज्ञ' ज्ञानी तक सिखाकर थोड़ा बहुत ज्ञानी बना जाऊंगी और पोस्टकार्ड भी लिखूंगी। अच्छा, रखती हूं।"

"ठीक है बेटी, कल मिलते हैं।"

–दिलीप भाटिया, जयपुर, राजस्थान

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **दीपक जैसवाल**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@ndb.vsnl.net.in
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070